

॥ १५२ ॥

ॐ ह्रीं सोमो हनिय हं फट स्वाहा ॥ ॐ हं हं संत्रा ज्ञानिय हं
 फट स्वाहा ॥ ॐ फट रचदिका य हं फट स्वाहा ॥ पं वाप चा
 रपुजा ॥ ये धर्मी सोत्र ॥ नत्वा श्रीवज्र वाराहि सर्वपाप
 मोचने सारविच्छेदने देवि ॥ बुधत्वं फलदायिनी ॥ ॥
 विसर्जयाय ॥ काय भले चोगु सिन्ह तं के ॥ ॥
 सरचक्र तो निज धुता विन्धु दत्ता भास्वर जग चरित्र त्रितया
 त्रैलोक्य सहित पियुरव वारापुर ना बुधना रासागरा विरा
 वीकरुणा ॥ दसिं धी हरा भावा भवे विचारना श्रीवज्र
 वाराहि का प्राप्नुव ॥ ॥ धनं ॥ सहनि ॥ सलि ॥ स ॥ सिन्ह ल
 खत को न चोय ॥ देव या त गिय के ॥ सहनि योय ॥ धनं
 जजमान न्यात ॥ रहस्य संदल ॥ दन के ॥ ॥ स्वान ॥ जाकि ॥
 वज्र ॥ जो न का न ॥ ॐ आ श्री सत वजे ॥ इत्यादि ॥ रहस्य सं
 दलं शुभ साहित ॥ न वन्हा ना काय ॥ संदल विसर्जन या के ॥
 धनलि ॥ स्वान ॥ स्वयो ॥ धति ना द्योय ॥ न्हा विसति याय ॥ ॥
 ॐ नमो श्री च ॥ क सं वराय ॥ स सं न्वा हरं नु मा बुधा अस्य
 रंवादि क्षु र्थीता वज्र सत्व सा चार्ज्य देवता क ह्य या म्य हं ॥
 वंदे भावादि सं सं गरा सत चनियं ॥ सत गुरु य त

ममाय ज्ञान संभव श्रीमते वज्रदाकांदा
 किंने चक्रवर्तिसि पंचज्ञान त्रिकाया यत्रानाय
 जगते नमः॥ यावतो वज्रदाकिन्य स्थीर संकल्प
 वदन्ना लोका कृते प्रवर्तिन्य सावत्रि भ्यो नमसदा॥
 स्वभावद्वुष्वा सर्वधर्मीनां स्वभावसुधो हं॥ ध्यानः॥
 नृपीत्याकारे सा हेतुवर्जितं रुकारं रूपना सार्धकका
 रे न को न स्थीनं सर्वसत्त्व दूरसा हेतो शुक्रवर्ति हिं
 भुजसंकरात्मानं भावयत॥॥ धनं हस्तसो धन॥॥
 दक्षीन हस्ते अकारे न च द्रु संदलं वा म हस्ते आकारे न
 सुज्य संदलं॥ ॐ वज्रपद्म हस्तो हं॥ ॐ ह नमहि स्वाहा॥
 हं वीषतय हे हं ह हो फट् २ हं॥ रवं व॥ ॐ वं हायो हिं सो
 हो हीं हं ह फट् २ वं॥॥ ॐ हं स्वाहा॥ ॐ हो स्वाहा धं ध॥
 ॐ वज्रसत्त्व संग्राहक वज्ररत्नमतं वज्रधर्म ग्रायने॥
 वज्रकर्म कुलोद्भव॥॥ वज्र धति ने॥ ॐ तर्किज हं॥ ३
 संदलसः धिय॥ ॐ श्री वज्र हे २ रु २ क हं फट् दा कि नि
 जाल स व रं स्वा हा॥ संरवः धिय॥ ॐ रं दो रो य हं फट्॥
 पुजा भलः धिय॥ ॐ वज्र पुरि पे स्वा हा॥ पुंः धिय॥ ॐ वज्र

ध्रुपे स्वाहा ॥ सतः धिये ॥ ॐ वज्रदिपे स्वाहा ॥ सतः
 धिये ॥ ॐ वज्रनैवद्य स्वाहा ॥ बलिसः जाकिः लंखः
 हायके ॥ ॐ अकार सुरव सर्व धर्माणां साद्यन्तु पत्र
 त्वा ॐ आहं स्वाहा ॥ स दलः धिये ॥ ॐ आहं स्वाहा ॥ तद
 नुमंत्र पात्र सो धनः मंत्र पात्रः स ॥ ध्वः हायके ॥ सं
 करोत कश्चन्यतां भाव्य ॥ कंकारे रा अष्टादस भुजा
 यक सुरवा त्रिनेत्रा खर्गवानां कुसुमस्य कपाले
 कुलिशं ध्वज ॥ तथा गता तथा घंथा नवो मंत्र वरप्रदा
 केतका धनु पाशं च खट्वां ग सकल स दल सुर
 मुंगार वीजा च गान्धर्वा त्रिचैतरे करे नं नवजो भन
 संपन्नां शून्यता शुभ सुंदरि ॥ ॥ सिंहलः त्रिकोनि
 चोय ॥ ॐ आ ॥ ॐ हं हो क्रि अरं स्वाहा ॥ ॐ अमृते र
 अमृत संभवे हे हि अमृत प्रवेशे ये हे हि अमृत
 प्रवेशय हि हं ॥ ॐ हकार हरते वशी होकार गंध
 नास नं हिं कार वीर्य हता च अमृता कारं तु भाव
 देव ॥ ॥ स्वभाव शुद्धाः प्रादार्घ्यतय ॥ भगवन्
 श्री सत श्री ३ वारुनि देवि भगता रके भो पाद्यं

१	प्रतिदस्वाहा ॥ स्वा नवो यः ॥ ॐ नम भगवते वासुदेवाय ॥	१८
२	देवि ॥ अमृत्य हो स्वाहा ॥ ॐ श्री हर्ते पीथाय स्वाहा ॥	२०
३	ॐ जालं चर पीथाय स्वाहा ॥ ॐ वदिया न पीथाय	२१
४	स्वाहा ॥ ॐ पुरी गिरि पीथाय स्वाहा ॥ ॐ धर्म चक्र	२२
५	स्वाहा ॥ ॐ संभोग चक्राय स्वाहा ॥ ॐ निमीरा च	२३
६	क्राय स्वाहा ॥ महा सुख चक्राय स्वाहा ॥ पंचो पचारः	२४
७	पुजाये धर्माः स्तोत्र ॥ ॐ निलनिलं च नीलं भा ॥ अक्षो	२५
८	भ्य संग संगिनी ॥ भग्या हंता महावीर ॥ ॐ क्षो ॥	२६
९	भव सामाकि ॥ तरपंन ॥ विय ॥ हंकार परमं देव	२७
१०	हंकार सिद्धि भाजन हंकार भवे न सुख्य हंकाराय	२८
११	नमस्तुते ॥ ॥ ध्यान या य ॥ पुसल सिजसि रवायं	२९
१२	दक्षिण करी ॥ आपुष्ट वस्य जव वास कररी रां भुं	३०
१३	मध्य द्वय चक्षु घो मां रं ॥ अक्षय का कक्षयोः	३१
१४	वृष नक्षयोः त्रिनाभोः को नासि का ॥ ॐ ॥ कंसु	३२
१५	रेव नं क धे कां हृदयेः हिं मे तेः प्रिलिं ॥ ॐ ॥ गुं गु	३३
१६	दे सो उरु युगे सु हं घ पो नं पादेः सि पादे पूरे म	३४
१७	ॐ गुं रे कु जा नु द्वयो पीथो पपि ध क्षत्रो पक्षत्र	३५

३६

३७

३८

३९

४०

४१

४२

४३

४४

४५

४६

४७

४८

४९

५०

५१

५२

५३

मेरा पको प मेरा प कर म सान प र म सान ॥ ॥ त तो
 अंग उ स ॥ या य ॥ हं हृदय नं स हि लला ते स्ना हां हं शि
 रवा यां वीर व त हे वा ह भ्याः ॥ हं हं हो चक्षु दे फ ट र सर वी ग ॥ ॥
 र व व ॥ ॐ वं ना भो हो या द्वि दि ॥ मो कं थे हीं हीं शि रवा यां
 हं हं शि र सि ॥ फ ट र सर वी गी ॥ ॥ ध्यानः या य ॥ तत्र स्व दि
 द ये अकारे न चन्द्र मंद लो परि कुरु न हं कारेः आका
 र र गत ॐ ॥ कार शु क फ ट र कारा ने ॥ आलिका लि
 यु गते मध्य शु क र गत कुरु न व री मु च्चा र्थ्य त द क्षर
 परि नंतं चक्र पत्तम वज्र वा ग्वि शुद्धि च कुर र्थात् ॥ ॥
 रुप र कं धै वै रौ च न ॥ वे द न्ता र कं धै व ज्र सु र्ज्य सं
 शान र कं धै पत्तम नृत्य स्वर संस्कार र कं धै व ज्र स न
 वि शान र कं धै व ज्र स त्व ॐ सर्व त था गत श्री व ज्र हे रु क
 व ज्र च क्षु र वो मो ह व ज्र ॥ स्र त यो दे र व व ज्र घ्रा न यो शी
 र वा व जि ॥ च क्षु यो श ग व ज्र सर्वा य त ने पुरे स्व र्थ्य व ज्र
 पृथि वि धा तु पा त नि ॥ आप धा तु सार नि ॥ ते जो धा तु
 रा क र्थ नि ॥ वा यु धा तु पत्तम नृत्य स्वारि ॥ आका स धा तु
 पत्तम ज्वा रि नि ॥ ॥ पुर तो आलिका लि पं कि स ध्य

५४ रंकारेनसुख्यसन्दलंततमध्यहंकारपरिणतः॥भगवंतं
 ५५ कृत्स्नवर्षाषतभुजप्रथमभुजाभ्यांवज्ररघंथाचरंद्विति ७२
 ५६ याभ्यांखर्गंतर्जनिपासनेतिग्याभ्यांदसकुरवत्वांगचतुर ७४
 ५७ सुखकृत्स्नस्यासरगतपीतांकाकास्याकृत्स्नठल्कास्यास्या ७५
 ५८ मास्वालास्यारगतशुक्लास्यापीतायसदादिकृत्स्नपीता ७६
 ५९ यमदुतिः॥पीतरज्जायमदुष्टिनीरगतस्यामायममथ ७७
 ६० निस्यामकृत्स्ना॥दिगवंधन॥ॐशुभनिसुभनिहंफटः॥७८
 ६१ ॐगृहहंफटः॥ॐगृहापयहंफटः॥ॐआनयहोभ ८०
 ६२ गवंनविद्याराजहंफटः॥ध्यान॥ततोआकारेणंकारेन ८१
 ६३ सुख्यसदलंततमध्यहंकारेनविश्ववज्रहंकारावि ८२
 ६४ खितंतद्रस्मिन्नाजवफलप्रसानंवज्रकर्णिकोपरि ८३
 ६५ रुपरसगंधोगतैवज्रमयिभुसिविभाषा॥॥ ८४
 ६६ ॐसैदनिवज्रिभववज्रवंधहं॥ॐवज्रप्राकारभूरव ८५
 ६७ हं॥ॐवज्रपंजरहंपहं॥ॐवज्रवितानहंरवहं॥ ८६
 ६८ ॐवज्रसरजालत्रांसतांवज्रज्वालानलार्कहंहंकार ८७
 ७० दिप्राकारजाष्टदिप्राकारंसमिपपिवेशितानिदादि ८८
 ७१ विन्धानंददयकिलयेत॥ॐघघघातय२सर्वद्रुता ८९

५०

५१

५२

५३

५४

५५

५६

५७

५८

५९

६०

६१

६२

६३

६४

६५

६६

६७

६८

६९

७०

नहं फटः ॐ कीलय २ सर्व पानहं फटः ॐ वज्रकीयवज्रधरा
 आनापयतिः ॐ सर्व विन्यविनायकानां कायवाकश्चित्तव
 ज्रकिलय २ हं फटः ॐ वज्रमुग्दलां वज्रकिलय साकोत
 य २ हं फटः ॥ ॥ इति निर्वीघ्न भावयत ॥ ॥ तत्र स्व
 दय चरुद हं कार रस्मि सि ज ग द र्थ कृत्वा अकशि ष भु
 वन गत्वा तत्र अनादि सं सिद्धि श्री चक्र सं वर भग वं
 त भगवति स सां सं दल पश्यंत ॥ ततो ह्रि दि जल स्मि
 मा भी ला कृष्णान चक्र सा का स्य दृष्टा अभिमुख स
 भि संपुज्य समर समर समर स म दले प्रवेसे समर
 सीकृत्य मनो मयो भि पुजा देवी भिश्च पुजयत ॥ ॥
 स्व भाव द्वाः पादा र्घ्यत य ॥ ॐ ऐं ऐं श्री वज्र हे हे रु क
 प्रवर सत काराय पादं प्रति द स्वां हा ॥ स्नान वी य ॥ ॥
 ॐ ३ सर्व बु ध दा कि नि य वज्र वशि ष वज्र वै रो च नि य
 हं हं फट फट फट स्वा हा ॥ म ध्य ॥ ॐ दा कि नि ये हं फटः
 ॐ रा मा य हं फट ॐ ख दो रो हा य हं फट ॐ रू पी नि य
 हं फट ॐ व ज्र क रो त क हं फट ॐ स म य क रो त क
 हं फट ॐ वि स म य क रो त क हं फट ॐ स म य वि स

मम

११

७२८
३५९
६४६

हीला मम

२१२५

८०० मय करो मय हं फटः ॐ कर र म यं दे हं फटः ॐ कु
५०० वं दा क्षि य हं फटः ॐ न मा सति हं फटः ॐ त्रा स य र
१०० म हा ना स हं फटः ॐ म य र वि र स ति य हं फटः ॐ ही र
र व र रि य हं फटः ॐ र लै के स्व रि य हं फटः ॐ द्र स र
क्षाय हं फटः ॐ क त र यै रा व ति य हं फटः ॐ द ह र म हा
मै र वि य हं फटः ॐ पं च र वा यु वे गा य हं फटः ॐ भ क्ष र
व सुरु चि रा न्त मा ला व सु वि न्य सु रा म धि य हं फटः
ॐ गृ ह र स प्र पा ता ल गं मे भु जं ग स र्प्य स्वा त र्ज य र
स्या मा दे वि य हं फटः ॐ आ क थ र सु म द्र य हं फटः
ॐ ही र ह य क नि य हं फटः ॐ नौ र र व गी न नि य हं फटः
ॐ ज्ये र च क्र वे गे य हं फटः ॐ हा र र व दे रा हे हं फटः
ॐ हीं सौ दि नि य हं फटः ॐ हं च क्र व र्म नि य हं फटः
ॐ कि री र सु वि लि य हं फटः ॐ सि रि र स हा व ले
हं फटः ॐ चि रि र च क्र व नि मी य हं फटः ॐ हि लि र
स हा वि र्य हं फटः ॐ का र स्या य हं फटः ॐ उ ल का
स्या य हं फटः ॐ स्वा ना स्या य हं फटः ॐ सु क रा स्या य
हं फटः ॐ य स दा दि य हं फटः ॐ य स दु ति य हं फटः

ॐ यमदुष्टनियहं फटः ॥ ॐ गोरगायहं फटः ॥ ॐ काला
 कुलायहं फटः ॥ ॐ कलंकमिषनायहं फटः ॥ ॐ अष्टहा
 सायहं फटः ॥ ॐ लक्ष्मिवरीहतासनियहं फटः ॥ ॐ घोरां
 चकारायहं फटः ॥ ॐ किलिक्कलालेवेहं फटः ॥ ॥ ॥
 पंचोपचारपुजा ॥ येधर्माः सौत्र ॥ रास्याकाय ॥ ॐ वज्रत्र
 संग्राहकवज्ररत्नमन्त्रं वज्रधर्मग्राहिन्पवज्रकर्म
 कुलोत्तमव ॥ ॥ ॐ वज्ररास्यहं ॥ ॐ वज्रविन्द्यहं ॥
 ॐ वज्रगितेही ॥ ॐ वज्रनितेअ ॥ ॐ वज्रगंधीहं ॥ ॐ व
 ज्रपुष्पेहं ॥ ॐ वज्रधुपेतां ॥ ॐ वज्रदिपेही ॥ ॐ नमोस
 हं नमामि नमनम ॥ ॥ ॐ ॥ ॐ नमो
 वक्रसंवराय सर्वज्ञानास्पदेहं जगदर्थप्रसादकं
 वीतामनिद्रविभुतं श्रीसंवरं नमस्तुते ॥ ॥
 व्यापविश्वसहाज्ञानसर्वीमनिस्पदास्थितं कृपा
 क्रोधमहारुद्रं श्रीसंवरं नमस्तुते ॥ ॥ ॐ ॥ ॐ नमस्तुते ॥
 ॐ नमो भगवते विरविरेस्वरायहं फटः ॥ ॐ नमो भग
 वते महाकल्पाग्नि संनिभायहं फटः ॥ ॐ नमो जता
 मकुतोत्तरालभिरवनमुरवायहं फटः ॥ ॐ नमो

स ~~स~~ भुज प्रभा स्वरा य हं फट ॥ ॐ नमः परसु
 पा स धृत त्रिसु ररवत्ता ग पारि नि य हं फट ॥ ॐ
 नमः व्या ध्र जिना वर च रा य हं फट ॥ ॐ नमः महा
 धु मां च कारा य हं फट ॥ ॐ ॥ धनं ह प्र स्व धना ॥ ॥
 रगत चंदनं त्रि को न चो यः वज्र ल्हा ति तयः ॐ आ हं ॥
 पा दा र्घ तय ॥ भगवन् श्री मत श्री इ वज्र जो गि नि भ
 दा र्के भ्यो पा दं प्रति द स्वा हा ॥ नान वो य ॥ ॐ वज्र
 वा रा हि यं हं फटः ॐ हां यो या मि नि य हं फटः ॐ सो मा
 ह नि य हं फटः ॐ ह्रीं ह्रीं स चार नि य हं फटः ॐ हं हं
 सं त्रा स नि य हं फटः ॐ फट फट च दि का य हं फट ॥
 ॐ ह वज्र सत्वा य स्वा हा ॥ नमः ही वै रो च ना य स्वा हा ॥
 ॐ स्वा हा हं प त्म नृत्य स्वरा य स्वा हा ॥ ॐ वो प ते ह
 रत्न सं भा वा य स्वा हा ॥ ॐ हं हं हो वज्र सु र्यो य स्वा हा ॥
 ॐ फट परमा स्व वज्रा य स्वा हा ॥ ॐ ॥ पंचौ पचारः
 पु जा ये धर्माः स्तोत्र ॥ ज गु ल्हा तं को पु या तय ॥ या
 मि न्या रव लु को ह नि भग व ति स चार नि सर्व दा
 सं त्रा सि न्य त था प रसु वि सत्ता जो गे स्व रि च दि

का चत्वारो भुजं मे क स्वा न मुरि वि निल सि तौ गारि
 स्था सा धुस धुस तत वेद पदं तां दे वी उ त्पा द भं गर हि ताः
 वरं दे ह धारि रण प्र भा वि नि च त्रै चा तुरु पि व ज्रा ग ना
 गु न ग नी ॥ स म लं कृ ता गि म त्प च र या मि स त त ज
 न नि जि ता नां ॥ ॥ त र पं त सं त्र ॥ ॐ न म भ ग व ते
 व ज्र वा रा हि य हं फ ट ॥ ॐ न म भ ग व ते अ प रा जि ते त्रै
 के मा त रे हं फ ट ॥ ॐ न म स र्व भू त भ ग्वा व हे स हा व ज्रे
 हं फ ट ॥ ॐ न म व ज्रा स ने अ जि ते अ प रा जि ते व स्यं
 क रि ने त्र भा वि ने हं फ ट ॥ ॐ न म शे च नि शो ष नि
 क्रो धि नि क रा नि चो हं फ ट ॥ ॐ न म सं त्रा स नि मा
 रि शि सु प्र भो दि नि प रा जि नि हं फ ट ॥ ॐ न म त य
 वि ज य जं भ नि मो ह नि ये हं फ ट ॥ ॐ न म व जि शि
 व ज्र वा रा हि व ज्र जो गि का मे स्व रि र व ते स्व रि य
 हं फ ट ॥ त द नु पा प दे स ना ॥ ॐ न म व जि शि
 नु मो दि त म ध्य म रि व ल रि वि द श वा रां
 दे स या मि पुर तः पुर क र क र व र वि द ध्य सा क
 र व गे जि नो त र जि न सु त स भु ता रि कु स ला

नि सुनु मोदिता निवौवौ संसेक परिनासे नसे
 परत्तजिनत्रये शरत्त मागे तोस्मि सर्व मोवे नवो
 चौ चित्तविदध्य अनुत मार्गतथागत ज्ञान इत्यादि
 योगसमय सत्त्वज्ञान सत्त्वय किंलालि कचित्ते तं
 भावयत् ॥ ॥ सिरसलं रव नं हाय ॥ ॐ अभिषिचातु
 मों सर्व तथागत अभिरथे क समय श्री य हं ॥ अभिस्थ
 रं महावज्रं त्रैधातु कं नमस्कृतं पुष्पा कं पुजन थीयम
 कुत पंचकुलोत्भवं ॥ सिरसवर्जनं धिय ॥ ॐ सर्व
 बुध बुद्धा मनिमहा सकुतं प्रतिदस्वाहा ॥ पंचमुद्रा
 के च ॥ ॐ वज्र चाले स्वरि अभिरिच हं ॥ ॐ सत्त्ववज्रि
 अभिरिच हं ॥ ॐ रत्नवज्रि अभिषी च त्रां ॥ ॐ धर्म
 वज्रि अभिरिच हं ॥ ॐ कर्मवज्रि अभिषी च आ ॥
 ध्यान ॥ अद्याभिषिक्त्वा ससिबुधैव जाभिषक्त
 इदं तं सर्व बुधत्वं हूँ हूँ वज्रं सुसिद्धये वजाधि
 पति त्वा मरिच मिव वज्र ना माभिषेक्त ॥ श्री हे
 रं क वज्रनामतथागत जात नाम भुवस्व ॥ ॥
 आक रवे नादि पुष्पं न्यास ॥ स्वा मी नो य सिल्लस ॥

ॐ आर्यै री चनाय स्वाहा ॥ ॐ अक्षो भ्याय स्वाहा ॥ ॐ
 रत्न संभवाय स्वाहा ॥ ॐ अमिताभाय स्वाहा ॥ ॐ अ
 मोघ सिद्धाय स्वाहा ॥ ॐ री चनाय स्वाहा ॥ ॐ सासकि
 य स्वाहा ॥ ॐ पांदराय स्वाहा ॥ ॐ ताराय स्वाहा ॥
 पंचोपचारपुजाये चर्मा स्तोत्र ॥ री चनादि चतुर्देवि
 शास्वतादि तथा गतः संवृत्तौ बुधसारव्या जापं कुर्या
 त सशंसाहित ॥ तर्पण ॥ विद्यः ॥ ॐ दृष्टे २ महाज्ञान
 सर्व बुधं माहं भवेत् ॥ धनं जापयाय ॥ जापु स्वातः
 मंदलसंतय ॥ धूपः स्वभावशुभाः पादाद्यंतय ॥
 भगवंन् श्री सत श्री ३ चक्रसंवर मंदल मदार
 के भ्यो पाद्यं प्रतिद स्वाहा ॥ स्वानवो यः ॥ ॐ दूकि
 नित्य हं यः ॥ ॐ रा मा य हं यः ॥ ॐ रव दरो य
 हं यः ॥ ॐ रु पि नित्य हं यः ॥ ॐ वज्र करौ तका य
 हं यः ॥ ॐ स मा य करौ तका य हं यः ॥ ॐ वि
 सम य करौ तका य हं यः स्वाहा ॥ ॐ सम य
 वि सम य करौ तका य हं यः स्वाहा ॥
 पंचोपचारपुजाये चर्मा स्तोत्र ॥ ॐ वासा

श्री चक्रसंवराय ॥ सर्वज्ञानसंदेहजगदर्थप्रसा
 दकं चीतासजिद्विभुतं श्रीसंवरं नमस्तुते ॥
 तर्पणविद्य ॥ हंकारपर्वतं हंकारसिद्धिभाज
 नं ॥ हंकारभवेद्युक्तं हंकाराय नमस्तुते ॥
 धुलिस्समाधिजुल ॥ ॥ धुतिधुनकाव ॥
 सकं धौः गरुशः महाकालः सिन्धुः सहनिः सुकुंदाः धुप ॥
 आवाहनवाय ॥ जापः ॐ भगवन् श्रीमान् श्री ३ नंदि
 के स्वरः गरुशः महाकालः कुमारः चक्रसंवरः
 वज्रवाराहिः वैश्वानरः आवाहनवाय इदं वज्रधुपं
 निसंग्रयास्य हं ॥ ॥ स्वभावशुद्धाः पादाद्यतय ॥
 भगवन् श्रीमान् श्री ३ नंदि के स्वरः गरुशः महाकालः
 कुमारः चक्रसंवरः वज्रवाराहिः वैश्वानरः देवता
 भदारकं भ्या पाद्यं प्रतिघृत्वा हा ॥ ॥ स्नानवाय ॥
 संकं धौ यात ॥ ॐ नंदि के स्वराय स्वाहा ॥ ॐ आयु
 वृद्धि य स्वाहा ॥ ॐ ज्ञा वृद्धि य स्वाहा ॥ ॐ धनवृ
 द्धि य स्वाहा ॥ ॐ प्रज्ञा वृद्धि य स्वाहा ॥ ॐ संज्ञान
 वृद्धि य स्वाहा ॥ ॐ महासुरव वृद्धि य स्वाहा ॥

गशोश यातः ॐ गं गानपति यस्वाहा ॥ ॐ गताधि
 पति यस्वाहा ॥ ॐ गरोश्वरा यस्वाहा ॥ ॐ गरापति
 पुजिता यस्वाहा ॥ ॐ गजवग्ता यस्वाहा ॥ ॐ धाना
 धिपत यस्वाहा ॥ ॐ महां काल यातः ॐ महां
 काला यस्वाहा ॥ ॐ कं कालि यस्वाहा ॥ ॐ कुलि के
 स्वरा यस्वाहा ॥ ॐ चंद्रि श्वरि यस्वाहा ॥ ॐ कुसार
 यातः कुसारा यस्वाहा ॥ धनुस धरा यस्वाहा ॥ वाच
 धरा यस्वाहा ॥ सयुरासना यस्वाहा ॥ ॐ सहनि यातः
 ॐ दं किनि यस्वाहा ॥ ॐ रासा यस्वाहा ॥ ॐ रवं दोरा हाय
 स्वाहा ॥ ॐ रुपिनि यस्वाहा ॥ ॐ वज्र करोत कायस्वाहा
 ॐ सम य करोत कायस्वाहा ॥ ॐ विस्मय करोत
 कायस्वाहा ॥ ॐ सम य विस्मय करोत कायस्वा
 हा ॥ ॐ सिंह यातः ॐ वं वज्र वारा हि य हं
 य ह स्वाहा ॥ ॐ हं यो या मिनि य हं य ह स्वाहा ॥ ॐ
 हिं सो सो ह नि यो हं य ह स्वाहा ॥ ॐ हीं हीं स वा स नि
 य हं य ह स्वाहा ॥ ॐ हं हं सं त्र स नि य हं य ह स्वाहा ॥
 ॐ य ह र चं द्री का य हं य ह स्वाहा ॥ ॐ सुकुंदा यातः

ॐ वैश्ववर्गा यस्वाहा ॥ ॐ मानि भद्रा यस्वाहा ॥ ॐ पुरी
 भद्रा यस्वाहा ॥ ॐ छन दा यस्वाहा ॥ ॐ वैस्वां नरा यस्वाहा ॥
 पंचोपचारपुजा ये धर्मा सोत्र ॥ ॥ आयुवृत्तिः ॥
 जसो वृद्धिः वृद्धिप्रज्ञासुखं यथा ॥ आयु आरोग्यं धनं ॥
 जनं गुणं संतानं सन्तुते सप्तवृद्धिरस्तु ॥ सकं धीयातः ॥
 ॥ रं वीदं स्वरूपाय विन्द्यराजं विनायकं हे रं वो प्रम
 देव गरा पति च नमस्तुते ॥ गंगायातः ॥ कृष्णवर्गा
 ॥ समारुद्र बुधसा सनरक्षकं कनिकपालधरं
 विरं श्रीमहं कालनमस्तुते ॥ महं कालयातः ॥
 कुमारं महाविरं मयुरासनकुमारं नमस्तुते ॥
 कुमारयातः ॥ नमश्चैव कृष्णवराय सर्वजज्ञान
 संदेहजगदर्थप्रसाधकं चिन्तामणिद्वि
 भुतं श्रीसंवरं नमस्तुते ॥ सहनि यातः ॥ नत्वा
 श्रीवज्रवाराहि सर्वपापप्रमोचनि मारविष्वं
 मनिदेवि बुधत्वफलदायनिः ॥ वज्रवाराहियातः ॥
 कजुसुविजनि जातं वैश्ववर्गा माही ज्वलं वैस्वा
 रमहवंदे सर्वसंपत्तिदायकं ॥ सुकुंदायातः ॥

तर्प विद्य ॥ हंकार इत्यादि ॥ वलिसं जाकिलं रव ॥ हा येक ॥
 इमा वलि हं फट स्वाहा ॥ धनं ॥ रवा यः ॥ धापि ॥ पुजा या य ॥
 धापि न सः संत्र पात्र ॥ द्यो न्य तय ॥ धुपः ॥ जा प या यः ॥
 जा प स्वा न त य ॥ भगवन् श्री सत श्री नदी के स्वर
 पंच गो सा ता वा रु नि दे वि आ वा ह न य ॥ भुज ॥
 धु पं नि सं त्र या स्य हं ॥ विज त यः ॥ संत्र पात्र ॥ गु ॥
 ह हो द्विं अरवं स्वाहा ॥ धापि न शः ॥ ला ॥ द कु ॥ त य ॥
 अमृत्य र अमृत प्रवेदा य हं ॥ त्रि को न जो यः ॥ ॐ आ हं ॥
 रवा य सः ॥ ला ॥ उ नः ॥ त य ॥ ध्या सं या य ॥ ॥ ॥ अष्ट दल
 क मलो परि ना ग व ल स ध्य व का रे रा वा रु नि स्व भा व
 त द्र त ह हो द्विं ॥ द्विं अरवं स्वाहा त दु त्प ना सुरा दे वि ॥
 व का म रु पि नि उ दि ता क्र व री सं द्वि सा रा क्षा र शः ॥ स म
 ल प्र भा ॥ सर्व रत्न वि चि त्रा गि प त्म व री स म प्र भा ॥
 अष्टा दश भुजा दिव्या संग ल कुरु से ॥ ॥ ॥
 स्व भा व गु धा ॥ पा दा र्घ त य ॥ भगवन् श्री सत श्री
 न दि के स्वर पंच गो सा ता वा रु नि दे वि ॥ पा दा र क र्था
 पा शं प्रति द्ध स्वा हा ॥ स्वा न वी य ॥ ॐ न द्रा य स्वा

ॐ भद्राय स्वाहा ॥ ॐ जया यस्वाहा ॥ ॐ सौम्या यस्वाहा ॥
 ॐ कपिलाय स्वाहा ॥ ॐ सहजानंदाय स्वाहा ॥ ॐ
 विमानंदाय स्वाहा ॥ ॐ पंचगोमानाय वज्रपुष्पप्रति
 दस्वाहा ॥ रवाजयातः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवे
 ॐ अमृत्युय स्वाहा ॥ ॐ श्रीहर्ते पिथाय स्वाहा ॥ ॐ जालं
 धर पिथाय स्वाहा ॥ ॐ वदिया नमिथाय स्वाहा ॥ ॐ
 पुर्णातिरिपिथाय स्वाहा ॥ ॐ चर्चक्राय स्वाहा ॥ ॐ
 संभोगचक्राय स्वाहा ॥ ॐ निर्वीजचक्राय स्वाहा ॥ ॐ
 महासुरवचक्राय स्वाहा ॥ ॐ पंचोपचारपुजाः ॥
 ॐ नमो सौत्र ॥ नमो भद्रा जया सौम्या कपिला च
 ॐ वावति पंचगोमानाय नमस्तुते ॥ रवाजयातः
 ॐ निलनिलं च निलं भा ॐ अक्षोभ्यसंगसंगिनिः
 भग्याहंता महाबाक्य ॐ अक्षोभ्य भवो नामकि ॥
 शापिनातः ॥ ॐ तर्पणा विद्य ॥ हंकारः इत्यादि ॥
 ॐ नमो ॥ ॐ वलं रज ॐ अकालं सुरवद ॥
 ॐ निलः ॐ पुजाः ॐ याय ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

आशा सहकाथि

२२

ASHA ARCHIVES

वाक् पुजा दाय ॥ मजसा नयातः रहस्य सो दल देने के ॥
 दे गुलि वलि विरा ॥ लं रव हाय के ॥ ॐ नमो भगवते
 मुरव सर्व धर्मी नं ना धनु त्पे नता ॐ नमो भगवते ॥
 स्वभाव वगु धा नादा र्ध तय ॥ म ग व नू शी ना न श्री
 अक्ष भैरवः अक्ष न तुकाः अक्ष लोक सा लः
 भव र के भ्यो पाश प्रति दस्वा हा ॥ स्वा ने वा य ॥
 व द ह भैरवा य स्वा हा ॥ ॐ यो सि तां ग भैरवा य स्वा हा ॥
 रु रु भैरवा य स्वा हा ॥ वं दू भैरवा य स्वा हा ॥ को ध
 भैरवा य स्वा हा ॥ व न म न भैरवा य स्वा हा ॥ व न म न
 य स्वा हा ॥ ॥ व ह्ना य सि य स्वा हा ॥ इ द्रा य
 स्वा हा ॥ के मारि य स्वा हा ॥ वि नु री य स्वा हा ॥
 वा रा हि य स्वा हा ॥ वा सु द्रा य स्वा हा ॥ न हा वा क्षी य
 स्वा हा ॥ ॥ पं चो प चार पुजाः ॥ ॐ नमो भगवते ॥
 तर पं न विरा ॥ के जल न न्य ॥ व स म यु
 यो नः या य ॥ न्हा नः सं न्य ॥ ३ स्व क क के
 अ नं दान प नि व य ॥ ॥ न्हा पो र
 या य के ॥ अ नं गु र पुजाः या य के ॥